सोशल मीडिया का युवाओं पर प्रभाव

संतोष नरूका, शोधार्थी
डॉ. विजय लक्ष्मी शर्मा, निर्देशिका
जैन विश्व भारती संस्थान, लाडनूँ, नागौर
मोबाइल नं. 9828402828
ई मेल – रचतचतपउम/हउंपसण्बवउ

मुख्य शब्द – युवा, सोशल मीडिया, नैतिक मूल्य, समाज, अपराध, इंटरनेट, नेटवर्किंग, सोशल साइट्स, जीवनशैली।

सारांश

सोशल मीडिया का प्रयोग वर्तमान में तेजी से बढ़ रहा है और इसके साथ ही इसका प्रभाव बढ़ रहा है। सोशल मीडिया का उपयोग युवाओं में तेजी से हो रहा है। संपर्क के साधन के साथ राजनीति, अर्थव्यवस्था और अन्य क्षेत्रों में इसके उपयोग में तेजी आ रही है। इसके कारण यह समाज के प्रत्येक पहलू को प्रभावित कर रहा है विशेषकर युवाओं के नैतिक और सामाजिक मूल्यों के साथ यह युवाओं की जीवनशैली और विचारों को प्रभावित कर रहा है। युवा सोशल मीडिया पर अपनी निजी जिंदगी खोलने लगा है साथ ही अन्य अप्रमाणित खबरों को वह सच मानने लगा है। जिसके कारण सोशल मीडिया का नकारात्मक पहलू भी उभर रहा है।

प्रस्तुत लेख में सोशल मीडिया के इन्हीं प्रभावों को विस्तारपूर्वक विवेचित और विश्लेषित किया गया है।

प्रस्तावना

सोशल मीडिया की परिभाषा में कहा गया है कि यह इंटरनेट आधारित अनुप्रयोगों का एक ऐसा समूह है जो प्रयोक्ता–जनित सामग्री के सृजन और आदान–प्रदान की अनुमति देता है। इसके अतिरिक्त सोशल मीडिया मोबाइल और वेब आधारित प्रौद्योगिकी से ऐसे क्रियाशील मंचों का निर्माण करता है जिनके माध्यम से व्यक्ति और समुदाय प्रयोक्ता–जनित सामग्री का संप्रेषण एवं सह–सृजन कर सकते हैं, उस पर विचार–विमर्श कर सकते है और उसका परिष्कार कर सकते हैं। यह संगठनों, समुदायों और व्यक्तियों के बीच संसार में महत्वपूर्ण और व्यापक परिवर्तनों को अंजाम देता है। 2000 के दशक के शुरू में सॉफ्टवेयर विकास कर्ताओं ने अंतिम इस्तेमाल कर्ताओं को इस बात में सक्षम बनाया कि वे वर्ल्डवाइड वेब पर स्थिर और निष्क्रिय पृष्ठों को देखने के बजाय अधिक परस्पर क्रियाशील बन सके, ऑन लाइन या वास्तविक समुदायों में प्रयोक्ता–जनित सामग्री का इस्तेमाल कर सके। इसकी परिणीति वेब 2.0 के रूप में हुई और सबसे महत्वपूर्ण बात यह हुई कि इससे एक अद्‌भुत प्रयोग का सृजन हुआ जिसे अब हम सोशल मीडिया कहते हैं।

सोशल मीडिया सामाजिक नेटवर्किंग वेब साइटों जैसे–फेसबुक, ट्विटर, लिंकर, यू–ट्यूब, लिंक्डइन, पिंटेरेस्ट, माइस्पेस, साउंडक्लाउड और ऐसे ही अन्य साइटों पर इस्तेमाल कर्ताओं को विचार–विमर्श, सृजन, सहयोग करने तथा टेक्स्ट, इमेज, ऑडियो और विडियों रूपों में जानकारी में हिस्सेदारी करने और उसे परिष्कृत करने की योग्यता और सुविधा प्रदान करता है। यह सच है कि सोशल मीडिया ने इंटरनेट का लोकतंत्रीकरण किया है और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि इसने भाषण और अभिव्यक्ति के आदर्शो को संरक्षित किया है किंतु इसके साथ ही यह भी उतना ही सही है कि इसने ऐसे दैत्यों को भी जन्म दिया है जो घात लगाए रहते है और लगता है कि उनकी संख्या बढ़ रही है। हाथ में रखे जाने वाले मोबाइल

उपकरणों जैसे – स्मॉर्टफोन और टैबलेट्स की संख्या तेजी से बढती जा रही है और इन उपकरणों पर इंटरनेट की उपलधता से वास्तविक समाजीकरण में तात्कालिता की भावना कई गुणा बढ गई है। इसके जरिए न केवल अति संवेदनशील और युवा दिलों को प्रभावित करने वाली अनुचित सामग्री आसानी से उपलब्ध हो जाती है, बल्कि निंदनीय मानसिकता वाले व्यक्तियों को विभिन्न प्रकार के जघन्य प्रयोजनों के लिए इस माध्यम का प्रयोग करने की छूट भी मिल जाती है। साइबर बुलिंग, साइबर स्टॉकिंग, अफवाहें फैलाना जैसे दुष्कर्म इस भयावह दैत्य के मामूली नमूने हैं।

सोशल मीडिया ने इस्तेमालकर्त्ता–जनित सामग्री के जरिए सार्वजनिक जीवन के जाने–माने व्यक्तियों की प्रतिष्ठा को भी आघात पहुंचाया है, निजता, कॉपीराइट और अन्य मानवाधिकार कानूनों का अतिक्रमण किया है। इन सभी बातों के बावजूद इस अद्भुत माध्यम के विकास में कोई रूकावट नहीं आई, जिसने न केवल भारत में बल्कि पूरी दुनिया में परंपरागत मीडिया का स्थान लेने और उसे मार्ग से हटाने का खतरा पैदा कर दिया है। सोशल मीडिया की अक्सर यह कह कर आलोचना की जाती है कि इसने लोगों के व्यक्तिगत रूप से मिलने की प्रवृत्ति पर विपरीत असर डाला है, जहां परंपरागत ढंग से एक–दूसरे से मिलने और बातचीत करने का समय किसी के पास नहीं है, लेकिन इसके बावजूद डिजिटल स्पेस सामाजिक नेटवर्किंग के नित नए आयाम और आकर्षण उपलब्ध करा रहा है।

सामाजिक नेटवर्किंग और सोशल मीडिया के विकास के प्रमुख संचालकों में से एक है, मोबाइल टेलीफोनी। ए.सी.नेल्सन की द सोशल मीडिया रिपोर्ट (2012) में कहा गया था कि सोशल मीडिया तक पहुंच कायम करने के लिए अधिकाधिक लोग स्मार्टफोनों और टेबलेट्स का इस्तेमाल कर रहे हैं। अधिक कनेक्टिविटी के साथ उपभोक्ताओं को सोशल मीडिया के इस्तेमाल करने की अधिक आजादी मिल रही है और वे जहां कहीं और जब चाहे सोशल मीडिया का इस्तेमाल कर सकते हैं।

इंटरनेट एंड मोबाइल ऐसोसिएशन ऑफ इंडिया की रिपोर्ट के अनुसार शहरी क्षेत्रों में सोशल मीडिया के प्रयोक्ताओं की संख्या दिसंबर 2012 तक 6.2 करोड पर पहुंच चुकी थी। शहरी भारत में प्रत्येक चार में से तीन व्यक्ति सोशल मीडिया का इस्तेमाल करते हैं।

इस रिपोर्ट के कुछ अन्य महत्वपूर्ण पहलू इस प्रकार है –

1. मोबाइल इंटरनेट का इस्तेमाल करते हुए सोशल नेटवर्किंग ऐक्सेस की औसत आवृति एक सप्ताह में सात दिन।

2. फेसबुक को भारत में 97 प्रतिशत सोशल मीडिया प्रयोक्ताओं द्वारा ऐक्सेस किया जाता है।

3. भारतीय सोशल मीडिया पर हर रोज औसत लगभग 30 मिनट व्यतीत करते है। इन इस्तेमाल कर्ताओं में अधिकतम युवा (84 प्रतिशत) और कॉलेज जाने वाले विद्यार्थी (82 प्रतिशत) है।

सस्ते मोबाइल हैंडसेट आसानी से उपलब्ध होने के कारण यह सहज अनुमान लगाया जा सकता है कि इंटरनेट का इस्तेमाल और नतीजतन सोशल मीडिया नेटवर्किंग के इस्तेमाल में भारत में आने वाले कुछ वर्षों में जबरदस्त बढोतरी होगी। इस रिपोर्ट में कहा गया है कि आज यह देखा जा रहा है कि मोबाइल फोन के जरिए सोशल नेटवर्किंग के इस्तेमाल में निरंतर बढोतरी हो रही है। मोबाइल फोन का प्रसार अत्यंत तीव्र गति से हो रहा है और ज्यादा से ज्यादा संख्या में लोग ऐसे फोन अपना रहे है जिनमें अनेक विशिष्टताएं होती है अथवा स्मार्ट फोनों की संख्या लोगों के पास बढती जा रही है। जो इंटरनेट ऐक्सेस प्रदान करने वाले होते है, जिससे सोशल नेटवर्किंग साइट्स भारत में सक्रिय इंटरनेट प्रयोक्ताओं के आधार का तेजी से प्रसार कर रही है। मोबाइल इंटरनेट सस्ता होने के कारण भी इसमें वृद्धि हो रही है।

सोशल मीडिया की बादशाहत पूरे समाज के सिर चढ़कर बोल रही है। हर आयु वर्ग के लोग इसकी गिरफ्त में हैं। यह लोगों को हंसाने के साथ रुलाने भी लगी है। अब तो नाबालिग भी इसकी गिरफ्त में आ चुके हैं, जो समाज के लिए शुभ संकेत नहीं है। सोशल मीडिया के ही अंग फेस बुक ने दो वर्ष पहले पड़ोसी राष्ट्र नेपाल के काठमांडू से गायब भाई को फेसबुक के जरिए भारत में मिला दिया। अगस्त 2012 में काठमांडू से रहस्यमय हालात में गायब 25 वर्षीय सुमित झा को दो नवंबर 14 को फेस बुक ने परिवार से मिलाया था। बड़े भाई 27 वर्षीय अमित झा ने बताया था कि छोटे भाई के गायब होने के बाद बहुत ढूंढा पर जब वह नहीं मिला तो एक वर्ष पहले फेसबुक पर उसकी फोटो डाली। इसका सार्थक परिणाम निकला और फेसबुक पर फोटो डालने के एक वर्ष के बाद हमारा छोटा भाई हमें मिल गया। इस खबर को दैनिक जागरण ने दो नवंबर 14 के अंक में प्रकाशित किया था। यह रहा सोशल मीडिया का सकारात्मक पहलू। इसके नकारात्मक पहलू पर जागरण ने समाज शास्त्रियों व मनोवैज्ञानिकों से बात की। प्रस्तुत है उनके विचार –

डा. अभिमन्यु सिंह ने कहा कि सोशल मीडिया का उपयोग सभी को करना चाहिए पर इसकी मानीटोरग भी होनी चाहिए। इसके उपयोग के लिए समय का निर्धारण होना चाहिए। क्योंकि इस पर अच्छी के साथ ही खराब जानकारियां भी उपलब्ध हैं। सोशल मीडिया पर अच्छी व सच्ची जानकारी डाली जानी चाहिए।

युवाओं में बढ़ती अतिसक्रियता व उसके दुष्परिणाम

वर्तमान समय में सोशल मीडिया के प्रयोग ने युवाओं को समय से पहले आक्रांत कर दिया है। युवा तुरंत पहचान बनाना चाहता है। बिना इंतजार किए प्रतिष्ठित होना चाहता है, और जब चाह नहीं पूरी होती तो वे आक्रामक व आपराधिक कार्यों को करने से नहीं डरते।

नकारात्मक प्रवृत्ति पर रोक जरूरी

सोशल मीडिया के फायदे तो बहुत हैं, पर इसने युवाओं को दिग्भ्रमित भी खूब किया है। इस पर धार्मिक उन्माद बढ़ाने वाले बयान नहीं आने चाहिए। अश्लील वीडियो पर पाबंदी होनी चाहिए और इस पर प्रभावी अंकुश के लिए कठोर कानून बनाकर कठोर कार्रवाई की जानी चाहिए।

अच्छी चीजें परोसने से रुकेगी आपराधिक प्रवृत्ति

डा. प्रज्ञेश कुमार मिश्र (2008) ने कहा कि सोशल मीडिया पर अच्छी जानकारियों व चीजें परोसने से युवाओं में आपराधिक प्रवृत्ति रुकेगी और सोशल मीडिया का साइड इफेक्ट नहीं पड़ेगा। दरअसल मानव की प्रवृत्ति अनुकरणात्मक होती है। समाज में जैसा परोसा जाएगा वैसा ही लोग अनुसरण करेंगे।

आज का दौर अगर सही मायने में देखें तो युवाशक्ति का दौर है। भारत में इस समय 65 प्रतिशत के करीब युवा हैं जो किसी और देश में नहीं हैं और इन युवाओं को जोडने का काम सोशल मीडिया कर रहा है। युवा वर्ग के लोगों में सोशल नेटवर्किंग साइट्स का क्रेज दिन पर दिन बढ़ता जा रहा है जिसके कारण आज सोशल नेटवर्किंग दुनिया भर में इंटरनेट पर होने वाली नंबर वन गतिविधि बन गया है। एक परिभाषा के अनुसार, 'सोशल मीडिया को परस्पर संवाद का वेब आधारित एक ऐसा अत्यधिक गतिशील मंच कहा जा सकता है जिसके माध्यम से लोग संवाद करते हैं, आपसी जानकारियों का आदान–प्रदान करते हैं और उपयोगकर्ता जनित सामग्री को सामग्री सृजन की सहयोगात्मक प्रक्रिया के एक अंश के रूप में संशोधित करते हैं।' सोशल नेटवर्किंग साइट्स युवाओं की जिंदगी का एक अहम अंग बन गया है। इसके माध्यम से लोग अपनी बात बिना किसी रोक–टोक के देश और दुनिया के हर कोने तक पहुंचा सकते हैं।

युवाओं के जीवन में सोशल नेटवर्किंग साइट्स ने क्रांतिकारी परिवर्तन लाया है। अगर इंटरनेट एंड मोबाइल एसोसिएशन ऑफ इंडिया द्वारा जारी आंकड़ों की माने तो भारत के शहरी इलाकों में प्रत्येक चार में से तीन व्यक्ति सोशल मीडिया का किसी न किसी रूप में प्रयोग करता है। इसी रिपोर्ट में 35 प्रमुख शहरों के आंकड़ों के आधार पर यह भी बताया गया कि 77 प्रतिशत उपयोगकर्ता सोशल मीडिया का इस्तेमाल मोबाइल से करते हैं। सोशल मीडिया तक पहुंच कायम करने में मोबाइल का बहुत बड़ा योगदान है और इसमें भी युवाओं की भूमिका प्रमुख है। भारत में 25 साल से अधिक आयु की आबादी 50 प्रतिशत और 35 साल से कम आयु की 65 प्रतिशत है। इससे देखते हुए आंकड़े बताते हैं कि भारत में सोशल मीडिया पर प्रतिदिन करीब 30 मिनट समय लोगों द्वारा व्यतीत किया जा रहा है। इनमें अधिकतम कालेज जाने वाले विद्यार्थी (82 प्रतिशत) और युवा (84 प्रतिशत) पीढ़ी के लोग शामिल हैं। सोशल साइट्स ने स्कूली दिनों के साथियों से मिलवाया तो आज देश–दुनिया के कोने में रहने वाले मित्र भी एक–दूसरे को फेसबुक पर ढूंढ़ रहे हैं। सोशल मीडिया के द्वारा जिनसे वास्तविक जीवन में मुलाकातें भले ही न पाये पर सोशल साइट्स पर हमेशा जुड़े रहते हैं। सोशल मीडिया की सफलता इससे भी देखी जा सकती है कि परंपरागत मीडिया भी अब फेसबुक व ट्विटर जैसे माध्यमों पर न सिर्फ अपने पेज बनाकर उपस्थिति दर्ज करा रही है, बल्कि विभिन्न मुददों पर लोगों द्वारा व्यक्त की गयी राय को इस्तेमाल भी कर रही है।

भारत सहित दुनिया के विभिन्न देशों में सोशल मीडिया ने सिर्फ व्यक्तिगत स्तर पर ही नहीं बल्कि कई सामाजिक व गैर–सरकारी संगठन भी अपने अभियानों को मजबूती दी है। सोशल मीडिया सिर्फ अपना चेहरा दिखाने का माध्यम नहीं रह गया है। जिन देशों में लोकतत्र का गला घोंटा जा रहा है वहां अपनी बात कहने के लिए लोगों ने सोशल मीडिया का लोकतंत्रीकरण भी किया है। हाल के वर्षों में अरब जगत में हुई क्रांतियों में सोशल मीडिया ने महत्पूर्ण भूमिका अदा की है।

युवाओं पर सोशल मीडिया का प्रभाव बहुत ही गहन है। ये वो वर्ग है जो सबसे ज्यादा सपने देखता है और उन सपनों को पूरा करने के लिए जी–जान लगाता है। युवा और सोशल मीडिया एक दूसरे से जुड़ गए हैं। जहां एक तरफ सोशल मीडिया युवाओं के सपनों को एक नयी दिशा दे रही है वही दूसरी ओर युवा वर्ग अपने सपनों को साकार करने के लिए इस माध्यम का उपयोग कर रहे हैं। इंटरनेट से लेकर थ्री–जी मोबाइल तक युवा सोशल मीडिया के माध्यम से देश–दुनिया की सरहदों को पार कर अपने सपनों की उड़ान कर रहे हैं। ब्लॉगिंग के जरिए जहां ये युवा अपनी समझ, ज्ञान और भड़ास निकालने का काम कर रहे हैं। वहीं सोशल मीडिया साइट्स के जरिए दुनिया भर में अपनी समान मानसिकता वालों लोगों को जोड़कर सामाजिक सरोकार–दायित्व को पूरी तन्मयता से पूरी कर रहे हैं।

लेकिन इसका एक नकारात्मक पहलू भी है। युवाओं को सोशल नेटवर्किंग वेबसाइट्स का नशा सा हो गया है। सोशल वेबसाइट पर दिन में कई बार स्टेट्स अपडेट करना, घंटों तक मित्रों के साथ चौटिंग करना जैसी आदतों ने युवा पीढ़ी को काफी हद तक प्रभावित किया है। घंटों तक फेसबुक व ट्वीटर जैसी वेबसाइट्स पर समय बिताने से न केवल उनकी पढ़ाई प्रभावित हो रही है बल्कि धीरे–धीरे कुछ नया करने की रचनात्मकता भी खत्म हो रही है। सोशल नेटवर्किंग साइट्स के माध्यम से तमाम अश्लील सामग्री और भड़काऊ बातें भी लोगों तक प्रसारित की जा रही है, जोकि लोगों के मनोमस्तिष्क पर बुरा प्रभाव डालती है और जिनकी वजह से देश में दंगा फसाद में वृदि हुई है। सोशल नेटवर्किंग साइट्स ने लोगों को वास्तविक जीवन को भूलाकर आभासी जीवन में रहने को मजबूर कर दिया है। सोशल साइट्स की आदत के कारण युवाओं में व्यक्तिगत संवाद की दिक्कत होती है, जिससे वे सामाजिक रूप से प्रभावी संवाद नहीं कर पाते हैं। इसके परिणाम स्वरुप आज के युवा पड़ी में धैर्य की भारी कमी देखी जा सकती है। युवावस्था एक ऐसी स्थिति होती है जिसमें व्यक्ति को अपने उपदेश के बारे में नहीं पता होता और उसके कारण उससे गलत संगति में पडने में जरा सा भी समय नहीं लगता। सोशल मीडिया के द्वारा युवाओं को पश्चिमी सभ्यता का अंधाधुंध अनुसरण करना आधुनिकता का मापदान लगने लगा है।

निष्कर्ष

सोशल मीडिया से हमारे देश के युवाओं की पूरी जीवन–शैली प्रभावित दिखलाई पड़ रही है जिसमें रहन–सहन, खान–पान, वेशभूषा और बोलचाल सभी समग्र रूप से शामिल हैं। मद्यपान और धूम्रपान उन्हें एक फैशन का ढंग लगने लगा है। नैतिक मूल्यों के हनन में ये कारण मुख्य रूप से है। आपसी रिश्ते–नातों में बढ़ती दूरियां और परिवारों में बिखराव की स्थिति इसके दुखदायी परिणाम हैं।

आज देश के सामने सबसे बड़ा यक्ष प्रश्न यह है कि युवा शक्ति का सदुपयोग कैसे करें। इसका जवाब सोशल मीडिया में ही छुपा है। अगर हमारे देश का युवा चाहे तो सोशल मीडिया के द्वारा अपने आपको एक अच्छा व्यक्ति बना सकता है। यहां वे अपनी अच्छाईयों व रचनात्मकता से रूबरू करा सकते हैं। सूचना के आदान–प्रदान, जनमत तैयार करने, विभिन्न क्षेत्रों और संस्कृतियों के लोगों को आपस में जोडने, भागीदार बनाने और सबसे महत्वपूर्ण यह है कि नये ढंग से संपर्क करने में युवा अपना हाथ बंटा सकता है और सोशल मीडिया को एक सशक्त और बेजोड़ उपकरण के रूप में तैयार कर सकता है।

संतोष नरूका, शोधार्थी

डॉ. विजय लक्ष्मी शर्मा, निर्देशिका

जैन विश्व भारती संस्थान, लाडनूँ, नागौर

मोबाइल नं. 9828402828

ई मेल – रचतचतपउम/हउंपसण्बवउ